International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(I), October - December, 2023, pp. 129-134

सिन्धू घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण

बनवारी लाल माली*

सार

प्रस्तुत शोध–पत्र में सिन्धू घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण में सम्बन्धित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। चूंकि इतिहास हमें वर्तमान में जीना सिखाता है। क्योंकि इतिहास को पढकर ही हम हमारी वर्तमान समस्या का निराकरण करते हैं तथा भविष्य में आने वाली समस्या की रोकथाम के उपाय ढूँढते हैं। अतः हमें इतिहास पढ़ना चाहिए व हमारे अतीत से सीख लेनी चाहिए। वर्तमान में पर्यावरण के संरक्षण की समस्या सम्पूर्ण विश्व में विकराल रूप से व्याप्त हैं, इसके लिए व्यापक पैमाने पर और विश्व स्तरीय उपाय भी किए जा रहे हैं, परन्तु पर्यावरण के सरक्षण की समस्या एक ऐसी समस्या है जिसका समाधान कोई एक संस्था, एक सरकार या कोई एक समाज नहीं निकाल सकता। इसका समाधान ढूढ़ना प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी बनती है। अतः इस जिम्मेदारी के नाते हमने इस शोध–पत्र के माध्यम से सिन्धू–घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण के उपाय ढूढ़ने का प्रयास किया है। इतिहास के विभिन्न कालों में पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न उपाय अपनाए गए थे। उनमें सबका यहां उल्लेख कर पाना सम्भव नहीं हैं, इसलिए हमने यहां केवल सिन्धू घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में ही पर्यावरण संरक्षण के उपाय ढूढ़ने का प्रयास किया है। सिन्धू घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में हमे पर्यावरण संरक्षण के बहुत सारे तथ्य व प्रमाण मिलते हैं, जिनसे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सिन्धू–घाटी सभ्यता के निवासी पर्यावरण संरक्षण को लेकर पूर्णरूप से जागरूक थे। कुछ प्रमाणों की बात करें तो जैसे–सड़कों के किनारे कूडेदान या गड्डों के साक्ष्यों का पाया जाना, गंदे पानी की नालियों को पक्की ईंटों से बनाया जाना, शौचालयों के साक्ष्यों का मिलना, मकानों के दरवाजे व खिडकियों का मुख्य सडक की और न खुलना, मृदमाण्डों पर पीपल, नीम, खजूर, बबूल आदि वृक्षों का अंकन मिलना, कूबड वाले सांड का अधिक अंकन मिलना, फाख्ता पक्षी का अंकन मिलना आदि सिन्धू–घाटी सभ्यता के निवासियों का पर्यावरण के प्रति प्रेम को प्रकट करते हैं। अतः प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से हमने तमाम साक्ष्यों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के क्या–क्या उपाय सिन्धू–घाटी सभ्यता में देखे जा सकते हैं, उन्हें ढूढ़ निकालने का प्रयास किया है। जिसमें हमनें प्राथमिक स्रोतों के माध्यम से विभिन्न प्रमाणों के द्वारा पर्यावरण संरक्षण के उपाय बताए हैं।

शब्दकोशः *पर्यावरण, सिन्धू–घाटी, प्राथमिक स्रोत, शोध–पत्र, विश्व पर्यावरण।*

प्रस्तावना

जैसा कि हम जानते हैं पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। जिसका प्रमुख उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण है। जिस प्रकार पिछले कुछ दसकों से पर्यावरण प्रदूषण बढा है वह हमारे भविष्य के लिए एक बड़ा संकट नजर आ रहा है। सम्पूर्ण विश्व इस समस्या से जूझता नजर आ रहा है। शिक्षा जगत भी अपने–अपने क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण के समाधान ढूंढ़ने का प्रयास कर रहा है। चूंकि इतिहास हमें वर्तमान में जीना सिखाता है और मानव अपने अतीत को पढ़ता भी इसीलिए है कि वह अपनी वर्तमान समस्याओं का

* रिसर्च स्कॉलर, डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्य, उत्तर प्रदेश।

समाधान अपने अतीत में ढूढ़े। और भविष्य में आने वाली समस्याओं से संचेत रहे और उनकी रोकथाम के उपाय अपनाए। अतः इतिहास के विद्यार्थी होने के नाते हमने इस शोध–पत्र के माध्यम से और पर्यावरण संरक्षण के उपाय सिन्धू–घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में ढूढ़ने का प्रयास किया गया हैं।

इतिहास के विभिन्न कालों में हमें पर्यावरण संरक्षण के उपाय देखने को मिलते हैं। इतिहास का प्रत्येक काल पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरूक रहा है। प्रत्येक काल की पर्यावरण संरक्षण की अपनी योजनाएं रही हैं, जिनके माध्यम से उन्होनें पर्यावरण संरक्षण किया था, परन्तु इतिहास के प्रत्येक काल की सभी योजनाओं का यहां उल्लेख कर पाना सम्भव नहीं हैं, इसलिए हमें अपने शोध–शीर्षक का सीमांकन करना पड रहा है। इस कारण हम इस शोध–पत्र के माध्यम से केवल सिन्धू–घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में ही पर्यावरण संरक्षण के उपाय ढूंढने का प्रयास करेगें।

सिन्धू घाटी में बहुत से तथ्य हमें मिलते हैं जो हमारा ध्यान पर्यावरण संरक्षण के उपायों की ओर खींचते हैं। यहां पर हम परिचय के रूप में कुछ तथ्यों का विवरण देना चाहेंगे ताकि पाठकों को इतिहास की सटीक जानकारी मिल सके। जैसे– सिन्धू घाटी सभ्यता के अधिकांश स्थलों से गंदे पानी की निकासी हेतु नालियों का पाया जाना। ओर इन नालियों को ढकने की व्यवस्था का भी पाया जाना सिन्धू वासियों के पर्यावरण संरक्षण को स्पष्ट दर्शा रहा है। मकानों के दरवाजे गलियों की ओर होते थे। मुख्य सडक के कोलाहल एवं प्रदुषण से बचने के लिए दरवाजे, खिड़कियां एवं रोशनदान सडकों की ओर न होकर पिछवाड़े की ओर खुलते थे। (अपवाद–लोथल) दीवारों में हवा तथा प्रकाश के लिए पत्थर की जाली लगाई जाती थी। इससे सूचित होता है कि हडप्पा संस्कृति के लोग स्वास्थ्य तथा सफाई के प्रति अत्यन्त सजग थे। आलमगीरपुर से मिले कुछ बर्तनों पर मोर व गिलहरी आदि की चित्रकारियों का मिलना सिन्धू वासियों के प्रकृति प्रेम को प्रकट करता है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा के ऊपर पद्मासन की मुद्रा में विराजमान एक योगी का चित्र मिला है, जिसके दायी और चीता और हाथी तथा बाई और गैंडा और भैंसा चित्रित हैं। एक देवता चौकी पर योगासन में विराजमान है, हाथ दोनो और फैलाये हुए है जिनमें चूड़ियां हैं। सिर पर सींगो के बीच से फूल अथवा पत्तियॉ निकलती हुई दिखाई गई हैं। दूसरी मुद्रा भी श्रृंगयुक्त है तथा उसके सिर से वनस्पति निकलती हुई दिखाई गयी है। स्पष्ट है कि यह वनस्पति अथवा उर्वरता का देवता है। जो प्रकृति की उत्पादन–शक्ति के प्रतीक माने जाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि सिन्धू घाटी के निवासी प्रकृति प्रेमी थे। ओर उनका यह प्रकृति–प्रेम कहीं–न–कहीं पर्यावरण संरक्षण की ओर इशारा कर रहा है। क्योंकि मानवे अपने बर्तनों पर, मुद्रा पर या किसी अन्य वस्तु पर उसका ही अंकन करता है जिससे वह अनन्य प्रेम करता हो। इस प्रकार हम देखते हैं कि सिन्धू–घाटी सभ्यता में अनेक ऐसे तथ्य मिलते हैं जो उनके पर्यावरण संरक्षण को दर्शाते हैं। इसलिए ही सिन्धू–वासियों का जीवन खुशहाल था, क्योंकि वो प्रकृति–प्रेमी थे। वर्तमान मानव को भी अपने अतीत की ओर मुड़ना चाहिए ताकि खुशहाल जीवन बिताया जा सके। इस भौतिकवादिता की दौड़ में अने अंधाधुन्ध नहीं दौडना चाहिए। इतिहास हमें जो सिखाता है वह हमें सीखना चाहिए ताकि हमारा वर्तमान जीवन सुखद हो व भविष्य भी सम्पन्न हो।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सिन्धू घाटी सभ्यता में पर्यावरण संरक्षण के अनेक उपाय मिलते हैं। इसी तरह इतिहास के अन्य काल–खण्ड़ों में भी पर्यावरण–संरक्षण के उपाय ढूढ़ने का प्रयास करे। तो इस विकराल समस्या का समाधान इतिहास में ढूंढा जा सकता है। अतः इस शीर्षक पर भी ओर शोध करने की आवश्यकता है।

शोध–पत्र के उद्देश्य

जैसा कि हमें विदित है किसी भी शोध–पत्र का उद्देश्य छिपे हुए सत्य का पता लगाना होता है। किसी भी शीर्षक के सम्बन्ध में नई जानकारी प्राप्त करना शोध कार्य का उद्देश्य होता है। अतः प्रस्तुत शोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्य भी सत्यासत्य का पता लगाना तथा छिपे हुए सत्य को उजागर करना है। इस शोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- **सिन्धू–सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण के उपाय ढूंढना :–** प्रस्तुत शोध–पत्र में हम सिन्धू–घाटी सभ्यता के संदर्भ में पर्यावरण संरक्षण के उपाय ढूंढने का प्रयास करेंगे। क्योंकि सिन्धु वासियों का पर्यावरण के प्रति लगाव अत्यधिक था, इस काल के लोग प्रकृति प्रेमी थे। इसलिए खुशहाल जिन्दगी जीते थे। परन्तु वर्तमान मानव मशीनीकरण के दौर से गुजर रहा हैं, आवश्यकता से अधिक भौतिकवादी बनता जा रहा है। अपनी निजी आवश्यकताओं के कारण वह प्रकृति को लगातार नुकसान पहुॅचा रहा है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र अनियमित होता नजर आ रहा है। पर्यावरण संरक्षण की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। अतः वर्तमान में हमें पर्यावरण संरक्षण की समस्या पर गौर करना चाहिए और इसके समाधान ढूंढ़ने चाहिए। इतिहास के प्रत्येक कालखण्ड में पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न उपाय अपनाए गए थे, उनमें से सिन्धु–घाटी सभ्यता के समय कौन–कौन से उपाय अपनाए गए थे, उनका गहन अध्ययन करना इस शोध–पत्र का प्रमुख उद्देश्य है। अध्ययन के बाद प्राप्त निष्कर्षों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाना इस शोध–पत्र का उद्देश्य है।
- **प्रस्तुत शीर्षक की प्रासंगिकता सिद्ध करना :–** जिस शोध शीर्षक पर हम कार्य कर रहे हैं उस शीर्षक की यदि वर्तमान संदर्भ में कोई प्रासंगिकता नहीं है तो हमें उस शीर्षक पर शोध–कार्य नहीं करना चाहिए। अतः हम प्रस्तुत शोध शीर्षक की प्रासंगिकता को सिद्ध करने का प्रयास करेंगे। वैसे तो यह शीर्षक अपने–आप में ही प्रासंगिक है क्योंकि पर्यावरण संरक्षण भारत की ही नहीं विश्व के प्रत्येक देश की बडी ही विकराल समस्या है। पर्यावरण संरक्षण की समस्या का अपना ही अलग रूप है। क्योंकि पर्यावरण संरक्षण की समस्या को इतना व्यापक रूप देने में समाज का पढ़ा–लिखा व सरकारी सेवा का व्यक्ति अधिक जिम्मेदार हैं क्योंकि जिस प्रकार एक पढ़ा–लिखा मानव कृषि कार्य करने या पशुपालन करने के बजाय औद्योगिक ईकाई स्थापित करने में ज्यादा रूचि रखता है इसलिए पर्यावरण को औद्योगिक ईकाईयों के माध्यम से असंतुलित करने में समाज का अभिजात्य वर्ग ज्यादा जिम्मेदा है। निम्न तबका या आदिवासी वर्ग आज भी प्रकृति–प्रेमी मिल जाता है जो कि पर्यावरण के संरक्षण के लिए एक अच्छी खबर है। अतः आज के दौर में पढ़े–लिखे मानव को ही इस शोध–पत्र के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश देना ही हमारा प्रमुख उद्देश्य है। जैसा कि रूसों ने कहा था – "एक पढा–लिखा समझदार मानव बिगड़ा हुआ जानवर होता है।" रूसो इस कथन के माध्यम से हमें यही संदेश देना चाहते हैं कि जैसे–जैसे मानव प्रगति करता जा रहा है। वैसे–वैसे ही भौतिकवादी बनता जा रहा हैं और प्रकृति का अपनी आवश्यकता के अनुसार दोहन कर रहा है।
- **विषय के प्रति रूचि पैदा करना :–** प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से हम सम्बन्धित विषय के प्रति पाठकों की रूचि जगाना हमारा प्रमुख उद्देश्य रहेगा। इतिहास हमें वर्तमान में जीना सिखाता है। क्योंकि हमारी प्रत्येक समस्या का समाधान इतिहास में ढूंढ सकते हैं, इसलिए पर्यावरण संरक्षण ही नहीं मानव जीवन अन्य समस्याओं का समाधान भी इतिहास में ढूंढ सकता है। और भविष्य में आने वाली समस्याओं से भी निजात पाया जा सकता है। अतः प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से हम पाठकों में इतिहास के प्रति रूचि पैदा करवाने का प्रयास करेंगे।

शोध –पत्र की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध–पत्र की अवधारणा को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर व्याख्यांकित करने का प्रयास किया गया हैः–

- शोध–पत्र की परिकल्पना पूर्ण व प्रत्यक्ष रूप से सिन्धू–घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण को लेकर की गई है।
- प्रस्तुत शोध–पत्र की अवधारण स्पष्ट है कि इसमें सिन्धू–घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण को लेकर तमाम तथ्यों का तार्किक व विश्लेषणात्मक वैज्ञानिक परीक्षण करने का प्रयास किया गया है।

- प्रस्तुत शोध–पत्र की परिकल्पना का आधार प्राथमिक स्रोत ही रहें है। कुछ स्रोत द्वितीयक व तृतीयक भी थे, जो पूर्णरूप से प्रामाणिक व विश्वसनीय थे, उनका भी उपयोग किया गया है।
- जैसा कि एक इतिहासकार का मूल मंत्र होता है– "नामूलं लिख्यते किंचित" अर्थात् बिना आधार के कुछ नहीं लिखना चाहिए। अतः इस मूल मंत्र को ध्यान में रखते हुए शोध–कार्य पूर्ण किया गया है। तथा सम्पूर्ण शोध–कार्य में किसी प्रकार की सामग्री बिना मूल या आधार के नहीं डाली गई हैं।
- प्रस्तुत शोध की परिकल्पना में किसी भी प्रकार की आदर्शात्मक अवधारणा को स्वीकारण नहीं किया गया है। सम्पूर्ण शोध–पत्र पूर्ण रूप से तटस्थ रहकर ही लिखा गया है।

शोध प्रविधि

सिन्धू घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण –

जैसा कि हम जानते है पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है जिसका उद्धेश्य पर्यावरण संरक्षण है जिस प्रकार पिछले कुछ दसकों से पर्यावरण प्रदूषण बढा है वह हमारे भविष्य के लिए एक बडा सकट नजर आ रहा है। भारत में एक वर्ष में हमारों लोगों की मौत पर्यावरण प्रदूषण से हो जाती है। अतः हमें पर्यावरण संरक्षण के उपाय ढूँढने चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय यदि हम सिन्धू घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में देखें तो बहुत सारे तथ्य हमें मिलते हैं जो हमें पर्यावरण संरक्षण के उपायों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते है।

जैसे वहां की सड़कों के किनारे कूड़ेदान या गड्डों के साक्ष्यों का पाया जाना। इस तथ्य से हम तथ्य से हम अनुमान लगा सकते हैं कि सिन्धू घाटी सभ्यता के लोग पर्यावरण संरक्षण के प्रति कितने जागरूक थे। शायद उन्हें मालूम था कि यदि कूड़ा–करकट एकत्र नहीं किया गया तो इससे मृदा प्रदुषण होगा जिससे भूमि बंजर हो जाएगी और बंजर भूमि पर्यावरण के अनुकूल नहीं होती। जिसका विपरित असर कहीं न कहीं मानव के ऊॅपर पड़ता है। इन सब बातों का सिन्धू घाटी सभ्यता के लोगों को ज्ञान था इसलिए उन्होंने कूडा–करकट के लिए गड्ढ़ा खोदना अथवा कूड़ेदान रखना प्रारम्भ किया।

हड़प्पा स्थल से पता चलाता है कि वहॉ के आवास स्थल कच्ची ईंटों के बने थे जबकि गन्दे पानी की नालियॉ पक्की ईंटों की बनी हुई थी। इस तथ्य से उनकी साफ–सफाई के विषय में गहरी सोच की ओर संकेत जाता है।क्योंकि हम अनुमान लगा सकते हैं की कोई व्यक्ति अपने रहने के लिए आवास तो कच्ची ईंटों से बनाएं और गन्दें पानी के निकास के लिए नालियॉ पक्की ईंटों की बनाई जाए, वह व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण के प्रति कितना जागरूक है। कोई भी व्यक्ति अपने रहने का आवास कच्चा व गन्दे पानी के निकास के लिए नालियॉ पक्की तभी बनाता है ज बवह गन्दे पानी से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में जानता है। क्योंकि हड़प्पा वासी जल प्रदुषण से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में जानते थे इसलिए ही उन्होने ने पक्की नालियों की व्यवस्था की थी। अतः हमें भी सिन्धू घाटी के लोगों से यह शिक्षा लेनी चाहिए और गन्दे पानी की नालियों को पक्की बनाया जाना चाहिए ताकि जल प्रदुषण से बच सकें जिससे हैजे जैसी खतरनाक महामारी के संक्रमण का खतरा रहता है।

सिन्धू घाटी सभ्यता के स्थलों से शौचालयों के साक्ष्य भी मिलते हैं। आज से लगभग चार हजार वर्ष पूर्व शौचालयों का पाया जाना इस बात का द्योतक है कि सिन्धू वासी खुले में शौच जाने से होने वाले दुष्परिणामों से वो परिचित थे। उनका ऐसा मानना होगा कि खुले में शौच जाने से वायू प्रदूषण होता है। जब बारिस आती है तो उसका पानी भी खुले में शौच जाने से प्रदुषित हो जाता है। हमारा पूरा पर्यावरण ही प्रदूषित हो जाता है, जिससे प्राणघातक बीमारियों के होने का खतरा बढ़ जाता है। अतः हम कह सकते है कि खुले में शौच जाने से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में हड़प्पा वासियों को ज्ञान था इसलिए उन्होंने शौचालयों का उपयोग किया। अतः हमें भी सिन्धू घाटी सभ्यता की और मुड़ना चाहिए, शौच जाने के लिए शौचालयों का निर्माण करना चाहिए।

सिन्धू घाटी सभ्यता के स्थलों (अपवाद–हडप्पा) के आवासों के दरवाजे, खिड़कियॉ, रोशनदान सभी मुख्य सड़क की ओर न खुलकर गली या पिछवाड़े की ओर खुलते थे। क्योंकि सिन्धू घाटी सभ्यता के लोगों को जानकारी थी कि मुख्य सड़क की ओर यातायात के साधनों का कोलाहल होगा जिससे ध्वनी प्रदुषण होता है जो हमारे पर्यावरण के लिए नुकसानदायक होता है। हमारे स्वास्थ्य पर भी विपरित प्रभाव पड़ता है।

सिन्धू घाटी सभ्यता के मृदभाण्डों पर पीपल, नीम, खजूर, बबूल आदि वृक्षों का अंकन मिलता है जो उनके प्रकृति प्रेम को प्रकट करता है। क्योंकि हम कह सकते हैं कि सिन्धू वासी पेड़ों से अत्यधिक लगाव रखते थे वे जानते थे कि पेड ही हमारे पर्यावरण को शुद्ध बनाए रख सकते हैं। पीपल का वृक्ष तो उन्हें सर्वप्रिय था जिसका कारण भी यहि रहा होगा कि पीपल सबसे ज्यादा पर्यावरण संरक्षण के काम आता है। सर्वाधिक ऑक्सीजन पीपल ही देता है जो पर्यावरण संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। अतः हमें भी अधिक से अधिक पीपल के वृक्ष लगाने चाहिए ताकी पर्यावरण प्रदूषित ना हो।

सिन्धू घाटी सभ्यता के लोगों को कूबड़ वाला सॉड अधिक प्रिय था। इस तथ्य से हम यह अनुमान लगा सकते है कि उनको गाय भी प्रिय रही होगी क्योंकि गाय के बिना सॉड की कल्पना नहीं कर सकते। अतः गाय भी उनका प्रिय पशु के रूप में रही होगी। क्योंकि गाय का मल–मूत्र मृदा प्रदुषण में काम लिया जाता है इसलिए हम कह सकते हैं कि गाय व सॉड दोनों से पर्यावरण संरक्षण करने में सहायता मिलती। इसलिए हमें भी अधिक संख्या में गायों को पालना चाहिए। बूचड़खाने बन्द करवा देने चाहिए ताकि प्रकृति का हम संरक्षण कर सकें।

फाख्ता नामक पक्षी उनका प्रिय पक्षी रहा था, जो उनके प्रकृति प्रेम को प्रकट को करता है। अतः हम कह सकते हैं कि सिन्धू घाटी सभ्यता के लोग मृदा प्रदुषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदुषण आदि से परिचित थे। इन सब से हमारा पर्यावरण भी प्रदूषित होता है जिससे अनेक प्रकार की महामारियॉ होने का खतरा होता है। सिन्धू वासी पर्यावरण प्रदूषण के प्रति पूर्णतः जागरूक थे इसलिए ही उन्होंने गन्दे पानी के लिए पक्की नालियॉ बनवाई, शौचालय का निर्माण करवाया, पेड–पौधों को संरक्षण दिया, पशु–पक्षियों का संरक्षण दिया। अन्तिम रूप से हम कह सकते हैं कि सिन्धू घाटी सभ्यता के लोगों ने सम्पूर्ण पर्यावरण का संरक्षण किया था अतः हमें भी सिन्धू घाटी सभ्यता की ओर मुड़ना चाहिए।

निष्कर्ष

चूॅकि इतिहास हमें वर्तमान में जीना सिखाता है इसलिए हमें इसको पढ़कर वर्तमान में हमारे सामने आने वाली समस्याओं का उपाय ढूॅढना चाहिए। चाहे पर्यावरण संरक्षण के उपाय हो या कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के उपाय हो या अन्य कोई समस्या के उपाय ढूॅढने हो, हमें हमारे अतीत को पढ़ना चाहिए और समस्याओं का समाधान ढूॅढना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण के कुछ उपाय हमने सिन्धू घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में देखे, सम्पूर्ण इतिहास में ऐसे बहुत से उपाय हमको और भी मिल जाएंगे बशर्ते हम हमारे अतीत को पढें, उसको समझें और जीवन में उतारें, हमारे अतीत को ओर मुड़ें।

सुझाव

प्रस्तुत शोध–पत्र में हमने सिन्धू–घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण के उपाय ढूंढने का प्रयास किया। इस शोध–पत्र के माध्यम से हमने पर्यावरण संरक्षण के क्या–क्या समाधान इतिहास के एक छोटे से कालखण्ड सिन्धू–घाटी सभ्यता में देखे जा सकते है, उन्हें ढूंढा। आगे हम यह सुझाव देना चाहेगें कि इस शीर्षक पर और शोध–कार्य होना चाहिए ताकि पर्यावरण संरक्षण को लेकर जो समस्याएं हमारे सामने आती हैं, उनका समाधान हम इतिहास में ढूढ़ सकें और पर्यावरण संरक्षण ही क्या मानव जीवन की प्रत्येक समस्या का समाधान हमारे अतीत में छिपा पड़ा है, बस उसे उजागर करने का जरूरत है। अतः और शोध–कार्य किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कल्चर एण्ड़ सिविलाइजेशन ऑफ एन्शिएन्ट इण्ड़िया–डी.डी. कौशाम्बी, विकास पब्लिशिंग हाऊस
2. A History of Civilization in Ancient India- आर.सी. दत्त, फॉरगेटन बुक्स
3. अमर उजाला, 3 जून, 2001 में प्रकाशित सूचना पर आधारित
4. सिन्धू सभ्यता – के.के. थवल्याल
5. टाइम्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 01 अप्रैल 2004 में प्रकाशित सूचना पर आधारित
6. टाइम्स ऑफ इण्डिया, लखनऊ में 20 अगस्त, 1988 को पृष्ठ 6 पर प्रकाशित चित्र
7. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति – कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद।

❖◆❖